B.A.(Hons) Sanskrit
Part - III
Paper - VII

डॉ अपर्णा कुमारी
स॰प्रा॰ (गेस्ट फैकल्टी)

छन्द

8. शार्दूलविक्रीडित -

लक्षण - सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।

अथवा,

सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्

शार्दूलविक्रीडित छन्द के प्रत्येक पाद में उन्नीस वर्ण होते हैं जिनमें एक मगण, एक सगण, दो तगण और एक गुरु वर्ण होते हैं। इस छन्द में 12 और 6 वर्ण पर यति होती है।

उदाहरण -

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वसिक्तेषु या
नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
आद्यौ वः कुसुमप्रवृत्तिसमये यस्या भवत्युत्सवः
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम् ॥

9. भुजंगप्रयात

लक्षण - भुजंगप्रयातम् चतुर्भियकारैः।

इस समवर्णिक छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः यगण - यगण यगण - यगण के क्रम से 12 - 12 वर्ण होते हैं।

भयनां भयं भीषणं भीषणानां।
गति प्राणिनां पावनं पावनानां ॥

(10) स्रग्धरा छन्द -

लक्षणम् - म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनि-यतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्।

इस छन्द के प्रत्येक पाद में मगण, रगण, भगण, नगण, यगण यगण, यगण इस क्रम से 21 वर्ण होते हैं। इसमें 6, 6, 6 वर्ण पर यति होती है।

उदाहरण -

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः ॥1॥
(अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मंगलाचरण)